8 साकारब्रह्मवादैकस्थापकाय नमः

૮ - साकारब्रह्मवौ કस्थापકः

'विशुद्ध सर्व धर्माशय રૂप ' निर्गुण બ્રહ્મનેજ साકार અને अैકયરૂप होवाना वादने स्थापन કरनार श्रीआचार्यજी छे.

अर्थ - यरित्र - संगति :

श्रीभागवतना द्वादश સ્કંદ ભગવાન हरिना द्वादशांग રૂप होवाथी 'કृષ્णાस्तुભगवान स्वयं' એવું ભાગવત માં निરૂपણ કरवामां आव्युं छे. કृષ્ણ आनंदરૂप साકर स्वરૂपवान अने आश्रयरूप छे. पोतानी आनंदमयी लीलाओ सर्ग-विसर्ग आदिરૂपथी ભાગવતમાં आनंदमय બ્રહ્મરૂपे वर्णन કरवामां आवी छे, કेમકे स्वयं व्यापક, सर्वत्र स्थित अने જેમાં समस्त બ્રહ્માંડની स्थिति होय ते બ્રહ્મ संज्ञाथी ओળખાय छे. आ साकार બ્રહ્મવાદની स्थापना विષ્णुस्वामीना सिद्धांत अनुसार आपे કरी अने आविद्वत्सભामां विષ્णुस्वामी सम्प्रદાયની पुनः स्थापना કरी. आ नाम 'श्रीधर्म' सूચક छे.

यित्र - संगति :

विधानगर પંડિતો साथे शास्त्रार्थमां विજय प्राप्त કरवाथी પંડિત समाજ श्रीआचार्यજी ने विજय पत्र अर्पण કरे छे.

नाम संगति :

आपे श्री विષ્णुस्वामी सम्प्रदाय अनुसार साकार બ્રહ્મવાદની स्थापना श्रीभागवतना आधारे કरी आ वात सर्व प्रामाण्य वेदमां सुसंगत होवानुं समજावવा 'वेदपरागः' नाम કहे छे.